संगम काल (100-300AD): राजनीति, प्रशासन, अर्थव्यवस्था, समाज एवं धर्म

भाग:-2

डॉ विभूति भूषण
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

SNSRKS, कॉलेज सहरसा

राजनीतिक इतिहास (Political history)

संगम काल में दक्षिण भारत में तीन राज्यों की स्थिति मिलती हैं: उत्तर पूर्व में चोल, दक्षिण पश्चिम में चेर और दक्षिण पूर्व में पांड्य|

चेर राजवंश (Chera dynasty)

इस राज्य का विस्तार मुख्य रूप से केरल में था| इस राज्य को कुडावर, विल्ल्वर, कुट्टवर, पुरैभार, मलैभार एवं बनावर आदि नामों से भी जानते हैं| इस राज्य का प्रतीक धनुष था| उदयनजेरल को इस वंश का प्रथम शासक माना जाता है| इसका उत्तराधिकारी नेदुजेराल था| नेदुजेराल ने मालाबार तट पर हिन्द यूनानियों से युद्ध कर उन्हें पराजित कर बंदी बना लिया| उसने सात राज्यों को पराजित करने के उपलक्ष्य में अधिराज की उपाधि धारण की| उसकी दूसरी उपाधि इमैव-रैमन थी जिसका अर्थ होता है- जिसकी सीमा हिमालय तक हो|

इसका उत्तराधिकारी इसका दूसरा पुत्र सेनगुट्टुवन था| इसे लाल चेर भी कहा जाता है| वह चेर का महान शासक था| इस के दरबार में श्रीलंका का शासक गजबाहु आया| इस बारे में महान कवि परनर ने किया है| शेन गुट्टूवन ने उत्तर दिशा में चढ़ाई कर गंगा को पार किया था| परनर के अनुसार उसके पास बड़ी नौसेना थी| इसने कन्नगी पूजा अथवा पत्नी पूजा प्रारंभ की| मेगास्थनीज भी पत्नी पूजा का उल्लेख करता है|

टॉलमी के उल्लेख से तथा कुरुवुर नगर के आसपास अनेक स्थलों से रोम सिक्के प्राप्त होने से यह प्रतीत होता है कि कुरुवुर चेरो की राजधानी थी| अन्य छोटे शासको में आय तथा पारि महत्वपूर्ण थे| संगम काल में अंतिम चेर शासक सेइये हुआ|